DEV SANSKRITI: Interdisciplinary International Journal **(2012) , 01, 65-70**

thou eY;k dk ldV ,o vk/;kfRed i=dkfjrk

सुखनन्दन सिंह

सारांश

आज हम मूल्य संकट के विषम दौर से गुजर रहे हैं। जीवन एवं समाज का हर क्षेत्र नैतिक पतन एवं मूल्यों के अवमूल्यन की गिरफ्त में है। लोकतंत्र का हर स्तम्भ लड़खड़ा रहा है। इस मूल्य संकट के समाधान के रुप में कई विकल्प प्रस्तुत किए जा रहे हैं। हमारे विचार में समस्त मूल्यों का स्रोत अध्यात्म है और इसके साथ पत्रकारिता को जोड़ा जाए तो आध्यात्मिक पत्रकारिता का वह स्वरुप उभर कर आता है जो वर्तमान वैचारिक प्रदूषण से भरे मूल्य संकट का एक प्रभावी समाधान हो सकता है। आजादी के दौर में भारतीय पत्रकारिता ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी। इसमें आध्यात्मिक दृष्टि एवं उच्च मूल्यों से युक्त आदर्शनिष्ठ पत्रकार सक्रिय थे। तिलक, श्रीअरविंद, गणेश शंकर, माखनलाल, गाँधीजी, पराड़कर जैसे मनीषियों की लम्बी कतार इसमें शामिल थी। आज के दौर में ऐसी ही मूल्यनिष्ठ एवं आध्यात्मिक दृष्टि से युक्त पत्रकारिता मूल्य संकट के समाधान के रुप में अपनी निर्णायक भूमिका निभा सकती है, जिसका विवेचन शोधपत्र में किया गया है।

कूट शब्द : जीवन मूल्य, मूल्य संकट, धर्म, अध्यात्म, आध्यात्मिक पत्रकारिता।

जीवन मूल्य एक विश्वास, एक मिशन एवं एक दर्शन हैं जो मानवीय जीवन को सही अर्थ व गुणवत्ता प्रदान करते हैं। ये हमारे जीवन के सही व गलत निर्णयों का असली मानदण्ड हैं तथा जीवन के स्वरुप एवं लक्ष्य का निर्धारण भी यही करते हैं। जीवन मूल्य एक मानसिक ऊर्जा हैं, जो जीवन को गति देते हैं (Posner, n.d.)। पश्चिम में जहाँ मूल्यों की अवधारणा नैतिकता एवं व्यवहार प्रधान रही, वहीं पूर्व में यह आध्यात्मिक रही। इसी कारण यहाँ पुरुषार्थ चतुष्टय के रुप में अर्थ एवं काम के साथ धर्म एवं मोक्ष को जोड़ा गया। अर्थ व काम जहाँ भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक मूल्य रहे, वहीं धर्म नैतिक मूल्य एवं मोक्ष परम मूल्य रहा (हिरियाना, 1983)। आज यदि जीवन–मूल्यों में गिरावट आयी है, तो इसका मतलब इतना ही है कि जीवन के प्रति आस्था टूटी है, जीवन लक्ष्यहीन हुआ है और जीवन के अतीत एवं भविष्य खो गए हैं। ऐसे में वर्तमान का भटकना स्वाभाविक है (पण्डया,1997)। इस चतुर्दिक मूल्य पतन के दौर में समाधान की तलाश में एक विकल्प के रुप में अध्यात्म एवं आध्यात्मिक पत्रकारिता पर विचार अभीष्ठ है।

पत्रकारिता के मूलभूत उद्देश्य हैं – सूचना, शिक्षा और मनोरंजन। इसी आधार पर जनमत निर्माण में भी इसकी अपनी भूमिका रहती है। पत्रकारिता को समाज का आईना भी कहा गया है, जो कुछ समाज में घटित होता है वह इसके माध्यम से अभिव्यक्त होता है। लेकिन पत्रकारिता के माध्यम की भूमिका को इसी दायरे में सीमित करना उचित न होगा। पत्रकारिता अपनी सत्यान्वेषी प्रकृति, शुभ दृष्टि एवं न्यायकारी भाव के कारण जनमानस को एक नई अंतर्दृष्टि देने वाला, एक प्रेरक माध्यम भी है, जो अपने सामाजिक सारोकार एवं मूल्यनिष्ठा के बल पर जनसमाज को दिशा दे सकता है। आज जब समाज का हर पक्ष नैतिक पतन के विषम दौर से गुजर रहा है, लोकतंत्र का हर स्तम्भ लड़खड़ा रहा है, दुनियां की खबर लेने वाली मुख्यधारा की पत्रकारिता स्वयं खबर बनती जा रही है, ऐसे में आध्यात्मिक पत्रकारिता की भूमिका पर विचार महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य हैं – वर्तमान मूल्य संकट का स्वरुप एवं इसके मूल का विवेचन, वर्तमान पत्रकारिता की दशा व दिशा का निर्धारण, आध्यात्मिक पत्रकारिता की अवधारणा एवं महत्व का विवरण एवं मूल्य संकट के समाधान के रुप में आध्यात्मिक पत्रकारिता की संभावित भूमिका का विवेचन।

orZeku eY; ldV dk Lo#i ,o ey dkj.k

मूल्य संकट के वर्तमान दौर में भारतीय लोकतंत्र का कोई भी स्तम्भ भ्रष्टाचार के आरोप से निष्कलंकित नहीं बचा है और उसके परत दर परत और गंभीर रुप सामने प्रकट हो रहे हैं। अपराध, हिंसा, प्रतिहिंसा विविध रुपों में लोकजीवन को भय एवं असुरक्षा से क्लांत कर रहे हैं। जहाँ धन ईष्ट बन गया हो और भोगवादी जीवन शैली लोक–संस्कृति, तो वहाँ पर यह असंभावित भी नहीं। ऐसे में संयम, सदाचार, सादगी, त्याग, सेवा, उदारता जैसे मूल्य दुर्लभ हो चले हैं, जिनके आधार पर एक सुखी–संतुलित जीवन एवं सभ्य समाज का निर्माण संभव होता है।

यह संकट मात्र देश तक सीमित नहीं है बल्कि समूचे युग में व्याप्त है। विज्ञान एवं तकनीकी के चरम विकास के साथ परिवर्तन चक्र इतनी तीव्र गति से घूम रहा है कि पूर्व स्थापित मान्यताएँ बदल रही हैं, धारणाएँ टूट रही हैं। मानदण्डों में परस्पर टकराव की स्थिति उत्पन्न होने लगी है। भौतिक और सांस्कृतिक जगत में तनाव आने लगा है।

आस्था और अनास्था के बीच जीवन मूल्य डाँवाडोल होने लगे हैं, उनमें विघटन होने लगा है। आचार्य श्रीराम शर्मा के शब्दों में – वर्तमान के इस भटकाव में बौद्धिक वैभव के प्रति अधिक विश्वास का भी योगदान रहा है। इसीलिए व्यक्ति अमंगलकारी स्पर्द्धाओं में फंसकर विद्वेष से भर गया है एवं उद्विग्न हो उठा है। आत्मीय संवेदनाओं से परिपूर्ण जीवन का उन्मुक्त क्षेत्र उसके लिए मानो अवरुद्ध सा हो गया है (पण्ड्या, 2004)। जीवन शैली में प्रमुखतया तर्कवादी, बुद्धिवादी दृष्टिकोण का समावेश होना और आदर्श जीवन मूल्यों के स्थान पर नए भौतिकता और भोग प्रधान स्वार्थ अहं मिश्रित मूल्यों का होना ही आज विश्व मानवता के पतन पराभव का मुख्य कारण है (पण्ड्या, 1997)।

आज जीवन मूल्यों के विघटन होने के कारणों का सर्वेक्षण किया जाए तो ज्ञात होगा कि इसका प्रमुख कारण तर्क की प्रधानता एवं विश्वास आस्था में कमी है। ऐसे में वर्तमान जीवन शैली में भौतिकवादी दृष्टिकोण और भोगवादी प्रवृत्तियों ने जीवन के बाह्य कलेवर में भले ही चमक पैदा कर दी हो किन्तु मनुष्य के आन्तरिक जीवन को अवश्य खोखलेपन और ओछेपन से भर दिया है। मानवीय दुष्कृत्यजन्य अनेकों समस्याएँ उपस्थित हो गई हैं। दुर्मति ने दुर्गति को चरम सीमा तक पहुँचा दिया है। इन समस्याओं के समाधान में संलग्न दिखने वाले तंत्रों के विशाल केन्द्र तो आज भी स्थान स्थान पर अवस्थित हैं परन्तु यह देखकर अत्यन्त निराशा होती है कि उनके अन्तराल में लोक जीवन को उत्कृष्टता से अनुप्राणित करने वाला प्राण कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता है (ब्रह्मवर्चस, 1983)। इसी के अभाव में बाह्य और आंतरिक जीवन में निरन्तर संघर्ष की स्थिति बनी हुई है। आदर्श–मूल्य विहीन जीवन से उत्पन्न जटिल मानसिक और भावनात्मक रोगों ने जीवन तत्व को निचोड़ दिया है। आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति अनास्था को इस सबके पीछे सक्रिय देखा जा सकता है (आचार्य, 2004)।

orZeku i=dkfjrk dh ;FkkfLFkfr

स्वतंत्रता संघर्ष के समय मिशन के रुप में शुरु हुई भारतीय पत्रकारिता आज घोर व्यवसायीकरण के दौर से गुजर रही है। आजादी के बाद नेहरु युग जहाँ भारतीय पत्रकारिता का स्वर्ण युग रहा, वहीं आपात का दौर इसका काला अध्याय। इसके बाद अस्सी के दशक में तकनीकी क्राँति के साथ इसमें व्यवसायीकरण का प्रवेश होता है और उदारीकरण के साथ यह पूरी तरह से व्यवसायीकरण के दलदल में धंसती जाती है। आलम यह है कि आज हम मूल्य ह्रास के भयावह चौराहे पर दिशाहीन खड़े हैं (सिंह, 2007)। भारतीय प्रेस परिषद के अनुसार, भारतीय पत्रकारिता जिन न्यूनताओं से ग्रस्त है, वे हैं –

विशेष वर्ग का ध्यान, आम जनता की अवहेलना, जनसराकारों की उपेक्षा या दमन, आर्थिक पत्रकारों को अनावश्यक महत्व, गलत एवं भ्रामक सूचना, राजनेताओं एवं व्यवसायिओं का साया, अपर्याप्त विकासपरक पत्रकारिता, जनता की अपेक्षा बाजार को प्रधानता, नारी शक्ति का अवाँछनीय चित्रण, गप्प–शप को अनावश्यक महत्व, सनसनी खबरों को प्रधानता, व्यैक्तिक जीवन में ताक–झाँक, सूचना संग्रह के बेइमान तरीके, अवाँछनीय सामग्रियों का बढ़ता प्रकाशन, दुर्घटना एवं दुखद घटनाओं के प्रति अमानवीय रवैया, विज्ञापन और संपादकीय में घटता विभेद, पत्रकार की निर्धारित योग्यता के मानदण्ड का अभाव, ओपीनियन पोल की खोल, प्रकाशन या सूचना के दमन में रिश्वत का बढ़ता चलन, मुद्दों का उथला एवं अप्रमाणिक प्रस्तुतीकरण, विज्ञापन की बढ़ती जगह, पश्चिमी संस्कृति एवं मूल्यों का अँधानुकरण, प्रलोभन के आगे घुटने टेकता पत्रकार, साम्प्रदायिकता का बढ़ता जहर, अपराध और सामाजिक बुराइयों का गौरवीकरण, अपराधी पर समयपूर्व निर्णय की अधीरता, प्रतिपक्ष के तर्कों व दलीलों की उपेक्षा, अनावश्यक प्रचार से बचाव, विज्ञापन के साये में आजादी खोती पत्रकारिता एवं संपादकीय गरिमा का ह्रास (प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया, 2001)।

एक दशक पूर्व घोषित ये समस्याएँ आज और विकराल रुप ले चुकी हैं। पेअड़ न्यूज की कई घटनाएँ विगत वर्षों में उजागर हुई हैं। राजनेताओं, व्यवसायी घरानों एवं माफिया गिरोहों के साथ पत्रकारों के नापाक गठजोड़ इसकी चिंताजनक स्थिति को उजागर करते हैं। संक्षेप में भारतीय पत्रकारिता दिशाहीनता एवं मूल्यह्रास की विकट अवस्था से गुजर रही है। स्पष्ट है कि मात्र भौतिक आधार पर मूल्य संकट की युग समस्या के प्रकाशपूर्ण समाधान की आशा नहीं की जा सकती।

lek/kku dh lkFkd fn'kk

प्रस्तुत समस्याओं के समाधान की तलाश में तमाम प्रयास निष्फल क्यों हो रहे हैं, गहराई से विचार करें तो स्पष्ट होता है कि प्रयास की दिशा सही नहीं है। जीवन की समग्र समझ एवं दृष्टि के अभाव में समस्या की जड़ तक नहीं जा पा रहे हैं। फलतः जो प्रयास हो रहे हैं, वे जड़ को सींचने की बजाए फूल पत्तियाँ और तने को पानी देने जैसे आधे अधूरे सिद्ध हो रहे हैं। अधिकांशतः अँधेरे को अँधेरे से दूर करने के निष्फल प्रयास चल रहे हैं। ऐसे में युगऋषि के शब्दों में अँधकार में प्रकाश उत्पन्न करने वाली ज्योति अध्यात्म क्षेत्र में ही उत्पन्न होने की आशा शेष रह गई है (शर्मा, 1984)।

जीवन के क्षेत्र में तथा संसार में समस्याओं के आकार प्रकार अनेक दिखाई पड़ते हैं, उनके कारण भी पृथक पृथक दिखाई पड़ते हैं, पर उनके मूल में एक ही कारण है – अध्यात्मवादी दृष्टिकोण का अभाव। यदि इस तथ्य को समझ लिया जाए तो असंख्य समस्याओं का, अगणित संकटों का समाधान एक ही उपाय से कर सकना संभव हो जाएगा। (आचार्य, 1998)। यदि जीवन की उलझनें सुलझाना चाहते हैं, समस्याओं का हल पाना चाहते हैं तो अध्यात्म की रीति–नीति अपनाने के लिए साहस जुटाना होगा। इससे कम में बात बनने वाली नहीं (आचार्य, 2003)। अध्यात्म को साथ लिए बिना किए गए प्रयासों की संपूर्ण सफलता संदिग्ध ही बनी रहेगी।

कहना न होगा कि वर्तमान की समस्त समस्याओं का समाधान और सुखी जीवन का एक ही उपाय है कि हमारी आस्थाएँ बदलें उसमें उत्कृष्टता का अधिकाधिक समावेश हो और उसका प्रतिफल व्यक्तित्व में बढ़ते हुए देवत्व के रुप में परिलक्षित हो। यदि हम अध्यात्मवादी रीति नीति अपना सके तो निश्चित रुप से प्रस्तुत अनेकानेक समस्याओं का समाधान पा सकते हैं (आचार्य, 1998क)।

v/;kRe dk vFk

अध्यात्म शब्द अधि और आत्मन् शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ आत्मा का अध्ययन एवं उत्थान है अर्थात् अस्तित्व का समग्र अध्ययन एवं अन्वेषण, जिस पर बढ़ते हुए व्यक्ति का उत्कर्ष सुनिश्चित होता है। अंग्रेजी के शब्द स्पिरिट में भी यही भाव निहित है। इसका अभिप्राय व्यक्तित्व की पावन एवं अनश्वर सत्ता से है। अध्यात्म का अर्थ है – व्यक्ति का गहनतम केन्द्र और परमसत्य का अनुभव (Eliade, 2005)।

आचार्य श्रीराम शर्मा के शब्दों में अध्यात्म विशुद्ध रुप से मनःशास्त्र है। इसके चेतन, अचेतन और अतिचेतन तीन स्तर आते हैं। व्यवहार और बुद्धि सचेतन हैं, आदतें अचेतन और उत्कृष्टता अतिचेतनता के प्रतीक हैं (आचार्य, 1998)। व्यवहारिक रुप में अध्यात्म का अर्थ ईश्वर के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता, आदर्शों की पराकाष्ठा है (आचार्य, 1998)। इस तरह धर्म का जो परिष्कृत रुप या चरम स्वरुप है वह अध्यात्म है। प्रायः अध्यात्म का उभार धर्म के गर्भ से ही होता रहा है। धर्म का चरमोत्कर्ष आध्यात्मिक अनुभूतियों में होता है (Eliade, 2005)। आचार्य श्रीराम शर्मा के शब्दों में धर्म के तीन अंग हैं – धार्मिकता, आस्तिकता और आध्यात्मिकता। व्यवहारिक रुप में धार्मिकता का अर्थ कर्तव्यपरायणता है, आस्तिकता का अर्थ ईश्वरी सत्ता पर विश्वास है, जो कि नैतिकता का मेरुदंड है और आध्यात्मिकता का अर्थ आत्म विश्वास, आत्म निष्ठा और आत्म विस्तार से है (आचार्य, 1998क)।

लेकिन धर्म से स्वतंत्र भी अध्यात्म का विकास हो सकता है। बिना किसी संस्थागत धर्म के मत, विश्वास एवं मार्ग का अनुकरण किए भी व्यक्ति अपनी अंतःप्रेरणा एवं प्रयोगधर्मिता के आधार पर अपने आत्मिक विकास को सुनिश्चित कर सकता है। अतः अध्यात्म का विकास धर्म के अंदर या बाहर कहीं भी हो सकता है।

अतः अध्यात्म से तात्पर्य उस जीवन दर्शन, जीवन मूल्य, जीवन दृष्टि एवं जीवनशैली से है, जिससे मानवीय चेतना का परिष्कार होता है, उसका आत्यांतिक परिमार्जन होता है और उसके व्यक्तित्व के चरम विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। इसे परिधि से केन्द्र की यात्रा कह सकते हैं, जिसके शिखर पर व्यक्ति का अपने अस्तित्व के केन्द्र से साक्षात्कार होता है और परमसत्य की अनुभूति होती है। स्वतः ही इसमें धर्म का वह स्वरुप भी समाहित है जो व्यक्ति के चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार को परिमार्जित कर उसे एक बेहतर इंसान, एक सच्चा इंसान बनाए। अतः अध्यात्म धर्म के अंदर भी पनप सकता है और इससे स्वतंत्र भी।

vk/;kfRed i=dkfjrk ,oa bldk egRo

धर्म और अध्यात्म के उपरोक्त स्वरुप को समाहित करने वाली पत्रकारिता को आध्यात्मिक पत्रकारिता की संज्ञा दी जा सकती है। संवेदनशीलता एवं सृजनात्मकता जहाँ इसके आधारभूत तत्व हैं वहीं अस्तित्व के हर पहलू एवं घटना के प्रति गहन अंतर्दृष्टि एवं समग्र सोच का भाव इसकी मौलिक विशेषता हैं। यह जहाँ समय की धड़कन को महसूस करने का सशक्त माध्यम है वहीं यह सीधे मानवीय चेतना के गहनतम तल का स्पर्श करती है। मूल्यक्षरण एवं नैतिक पतन के दौर में इसके महत्व को समझा जा सकता है।

आध्यात्मिक पत्रकारिता अपने सकारात्मक एवं सात्विक स्वरुप के आधार पर एक ताजी हवा के झौंके की तरह पाठकों को रोजमर्रा के तनाव के बीच शांति–सकून के कुछ पल दे सकती है। जीवन के घोर अंधकार के बीच भी आशा की किरण बनकर उसके जीवन को प्रकाशित कर सकती है और जीवन का उच्चतर दिशा बोध कराती हुई उसके आत्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

आध्यात्मिक पत्रकारिता के महत्व को निम्न बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है – पाठकों की आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान, भोगवादी विचारों की सशक्त काट, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का विकास, स्वस्थ–संतुलित जीवन शैली के प्रति जागरुकता, अंधविश्वास एवं चमत्कारी बाबाओं का फंड़ाफोड़, सार्वभौम शांति एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण का

निर्माण एवं सकारात्मक परिवर्तन की संवाहक के रुप में मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता की पुनर्प्रतिष्ठा (Singh, 2012)।

इनके अतिरिक्त आध्यात्मिक पत्रकारिता निम्नलिखित भूमिका भी निभा सकती है –

सकारात्मक विचारों का प्रसार, विकार मुक्ति एवं सात्विक दिशा में चलने की प्रेरणा, वातावरण में वैचारिक प्रदूषण की विषाक्तता से मुक्ति, नैतिक एवं अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा, सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा, 6. धार्मिक विवाद के बीच समाधानकर्ता की भूमिका, सामाजिक रुढ़ियों, अंध–विश्वासों से मुक्ति दिलाने में योगदान, जीवन के गूढ़तम रहस्यों का उद्घाटन, युग की ज्वलंत समस्याओं के समाधान में सहयोग, प्रस्तुत नैतिक पतन एवं अपसंस्कृति के दुष्प्रभावों का निराकरण, आत्म गौरव के भाव से राष्ट्र का जागरण (आलोक, 2009)।

आश्चर्य नहीं कि समाचार पत्रों में अध्यात्मपरक सुनिश्चित स्तम्भ सुधी पाठकों के लिए प्राण वायु का काम करते हैं। जीवन के प्रति आशापूर्ण भाव विकसित करते हैं, दृष्टिकोण को परिमार्जित करने में सहायक बनते हैं और जीने की राह दिखाते हैं। आज हिंदी के सभी पत्रों एवं अँग्रेजी के प्रायः अधिकांश अखबारों में दैनिक आध्यात्मिक स्तम्भ निकलते हैं। इसी तरह साप्ताहिक परिशिष्टों का चलन हिंदी में देखा जा सकता है। टाइम्स ऑफ इंडिया में हर रविवार को प्रकाशित होने वाली 8 पृष्ठीय पत्रिका–*द स्पीकिंग ट्री* इस दिशा में एक सराहनीय प्रयोग है। अपनी व्यावसायिक सीमाओं के चलते इनके प्रभाव सीमित हो सकते हैं, लेकिन इनके महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

आध्यात्मिक पत्रकारिता के वास्तविक प्रकाश स्तम्भ हैं वे आध्यात्मिक पत्रिकाएँ जो विशुद्ध पारमार्थिक भाव से बिना किसी विज्ञापनबाजी एवं प्रपंच के सात्विक विचार एवं भावों का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। प्रबुद्ध भारत (1896), कल्याण (1926), अखण्ड ज्योति (1940) जैसी पत्रिकाएं लम्बे अंतराल से इस दिशा में कुछ मानक स्तम्भ हैं। 1996 से प्रकाशित लाइफ पॉजीटिव को इस दिशा में एक नवल शुरुआत कह सकते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न आध्यात्मिक संगठनों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएं सराहनीय कार्य कर रही हैं, जिनमें तपोवन प्रसाद, दिव्य जीवन, अरविंद कर्मधारा, स्वर्ण हंस, ऋषि प्रसाद, मॉउण्टेन पाथ, ओशो टाइम, द रिब्यू ऑफ रिलीजन, सेल्फ इवोल्यूशन, विवेक ज्योति, तत्वलोक, योगदा सत्संग, ज्ञानामृत, सनातन सार्थी आदि कुछ उल्लेखनीय नाम हैं (सिंह, 2012)।

thou eY;k dh lokgd ,o lj{kd d: i e bu if=dkvk dh Hkfedk dk fuEu : i e n[kk tk ldrk g &

vkLFkk dh çrhd if=dk,

कल्याण, अखण्ड ज्योति, अग्निशिखा, पुरोधा, अखण्ड आनन्द और परमार्थ जैसी पत्रिकाओं ने तो वास्तव में इतनी प्रतिष्ठा अर्जित की है कि इन्हें धर्मग्रन्थों की तरह मँगाया और पढ़ा जाता है। कल्याण के मानस अंक और शक्ति अंक का पाठ पारायण तक हुआ है और नव रात्रियों में लोगों ने इनका साधना ग्रन्थों की तरह प्रयोग किया है (ज्योतिर्मय, 2008)। यही स्थिति अखण्ड ज्योति की है। इसके योग–साधना, जीवन साधना, अंतर्जगत की यात्रा का ज्ञान विज्ञान, शिष्य संजीवनी, श्रीगुरुगीता, वैज्ञानिक अध्यात्म, क्रांति विशेषांक जैसे अंक उल्लेखनीय हैं।

0;olkf;drk l nj fe'kujh Hkko

बिना विज्ञापन के मात्र लागत मूल्य पर प्रकाशित हो रही ये आध्यात्मिक पत्रिकाएं आज भी व्यवसायिकता के घोर कलयुग में सेवा भावना से ओत प्रोत हैं और मर्यादा निर्वहन एवं सत्प्रेरणा का स्रोत बनी हैं। कुछेक धार्मिक–आध्यात्मिक पत्रिकाएँ विज्ञापन छापती हैं और उनमें बीड़ी सिग्रेट से लेकर ताकत की आयुर्वेदिक दवाओं के विज्ञापन भी छपते हैं। लेकिन इसी कारण न उनकी कोई छवि बन पाई और न ही उनका कोई प्रभाव ही बढ़ा। वे प्रकाशित करने वाले संस्थानों की सूचनाएँ छापने और समाचार देने वाली विज्ञप्तियाँ मात्र रह गई (ज्योतिर्मय, 2008)।

l tukRed vkUnkyu dh mRçjd

सशक्त वैचारिक आधार एवं आध्यात्मिक भाव के कारण ये पत्रिकाएँ रचनात्मक आंदोलनों की प्रेरक बनी हैं। मथुरा से प्रकाशित होने वाली अखण्ड ज्योति मासिक पत्रिका अपने लाखों पाठकों के संगठन के आधार पर सत्प्रवृति संवर्धन और दुष्प्रवृति उन्मूलन के कई रचनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्यक्रम चला रही है। कल्याण की बदौलत घर–घर में सनातन धर्म का आध्यात्मिक प्रवाह प्रवेश हुआ है। पत्रिका ने बिना शोर शराबा किए हजारों ऐसे लोग ढाले जो अब शुद्ध सात्विक जीवन में निष्ठा रखते हैं और उसके लिए निर्धारित विधि निषेधों का कड़ाई से पालन करते हैं। परिवार में सुसंस्कारिता संवर्धन और व्यक्ति में धर्मपरायणता के भावों के बीजारोपण में कल्याण ने सराहनीय भूमिका निभायी है और अभी भी निभा रही है। इसी तरह जताराम ज्योतिए गुजराती कल्याण, जन कल्याण, अखंड आनन्द, आनन्द संदेश, महाप्रभु दर्शन, गुरु सार्वभौम, रामदर्शन तत्वदीप, अखण्डप्रभा, अखण्ड

सच्चिदानन्द संदेश, वेद सविता आदि कितनी ही पत्रिकाएँ हैं जिन्होंने छोटे बड़े संगठन बनाए और लोगों के आध्यात्मिक रुझान को दिशा दी है (ज्योतिर्मय, 2008)।

ufrd eY; vkj lnx.k lRçofÙk lEo/ku

नैतिक मूल्यों और सदगुणों सत्प्रवृत्तियों में आस्था सुदृढ़ करने की दृष्टि से भी इन पत्रिकाओं ने बहुत कुछ योगदान दिया है। जिस घर में आध्यात्मिक पत्रिकाओं का नित्य पाठ एवं स्वाध्याय होता है, वहाँ व्यक्ति में सद्चिंतन, सद्भाव एवं सत्कर्म की त्रिवेणी का प्रवाहमान होना सुनिश्चित है।

नैतिक पतन–पराभव के इस युग में इन पत्रिकाओं की मूल्य संवर्धक भूमिका को समझा जा सकता है।

fu.kk;d ifjorlu dk vk/kkj cu ldrh g vk/;kfRed i=dkfjrk

आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा आध्यात्मिक पत्रकारिता को विचार क्रांति के सशक्त माध्यम के रुप में अखण्ड ज्योति के रुप में प्रयोग किया गया व आज भी यह युग के निविड़ अंधकार के बीच एक प्रकाशदीप की तरह प्रज्ज्वलित है, जिसकी आभा को कोई भी सुधी पाठक अनुभव कर सकता है। यही अन्य कई आध्यात्मिक पत्रिकाओं के संदर्भ में सत्य है। हालाँकि अपनी विस्तार सीमा के अनुरुप उसके प्रभाव की अपनी सीमा है।

वस्तुतः आध्यात्मिक पत्रकारिता की संभावनाएं असीम हैं। आचार्य रजनीश के अनुसार आध्यात्मिक पत्रकारिता नए युग का प्रारम्भ बन सकती है। पत्रकारिता में बड़ी से बड़ी क्रांति अगर होगी तो वह है कि इस देश में एक अलग किस्म की पत्रकारिता पैदा हो, जो राजनीति के द्वारा नियंत्रित न हो और देश के प्रज्ञावान लोगों द्वारा प्रेरित हो। पत्रकारिता का यह एक मूलभूत कार्य रहेगा कि जनता के सामने प्रज्ञावान लोगों को और उनकी प्रज्ञा को प्रकट करें (Nandita, 1989)।

fu"d"k

इस तरह जीवन मूल्यों के संकट से जूझ रही मानवता के लिए आध्यात्मिक पत्रकारिता समाधान की उजली किरण की तरह है। इसको अधिक से अधिक प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। विशुद्ध रुप से आध्यात्मिक पत्रिकाओं के अतिरिक्त मुख्यधारा के समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में इसकी बढ़ती जगह (स्पेस) इसके उज्जवल भविष्य का द्योतक है। लेकिन इनमें हो रही कवरेज स्वयं में एक शोध का विषय है (सिंह, 2012)। यह स्थान अधिक से अधिक बढ़े, अतः इस दिशा में ठोस प्रयत्न करने की आवश्यकता है। युग चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करने हेतु आध्यात्मिक पत्रिकाओं में भी कुछ मौलिक सुधार की जरुरत है (सिंह, 2012)।

मुख्यधारा की पत्रकारिता के अतिरिक्त पत्रकारिता के शैक्षणिक पाठ्यक्रम में भी आध्यात्मिक पत्रकारिता को शामिल करने की जरुरत है। साथ ही इसके प्रशिक्षण के लिए, आचारणनिष्ठ प्रशिक्षकों की जरुरत है। यदि इतना संभव हो सका तो आध्यात्मिक पत्रकारिता मूल्यसंकट से गुजर रही पत्रकारिता के लिए ही नहीं, बल्कि समूचे समाज एवं युग को सुसंस्कारित करने की दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विचार क्रांति के एक सशक्त माध्यम के रुप में, सकारात्मक परिवर्तन के संवाहक के रुप में इसकी निर्णायक भूमिका कुछ वैसे ही अपेक्षित है, जैसा कि भारतीय संदर्भ में यह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान निभा चुकी है।

सुखनन्दन सिंह, पी–एच.डी., एसोशिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

lnHk lph

vkpk;] Jhjke'kek ¼1998½ *धर्म का तत्व दर्शन एवं मर्म (वांड़्मय खंड–53)*। मथुरा : अखण्ड ज्योति संस्थान, पृ. 41, 3.33, 2.44

vkpk;] Jhjke 'kek ¼1998d½ *भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व (वांड़्मय खंड–34)*। मथुरा : अखण्ड ज्योति संस्थान, पृ. 5.13, 6.28

vkpk;] Jhjke'kek ¼1998[k½ *विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक (वांड़्मय खंड–23)*। मथुरा : अखण्ड ज्योति संस्थान।

vkpk;] Jhjke 'kek ¼2003½ *अध्यात्म ही क्यों?* मथुरा : गायत्री तपोभूमि, पृ. 4.8

vkykd] Vh- Mh- , l- ¼2009½ *मीडिया प्रबन्धन– आध्यात्मिक पत्रकारिता।* नई दिल्लीः सूर्याप्रभा प्रकाशन, पृ. 54–56

T;kfre; ¼2008½ लोगों की आस्था सम्भाले धार्मिक पत्रकारिता की उपेक्षा क्यों। ज्ञानेन्द्र रावत (संपादक) *प्रेस–प्रहार और प्रतिरोध।* दिल्ली : नटराज प्रकाशन, पृ. 134, 135

i.M;k] ç.ko ¼1997] ekp½ जीवन मूल्यों का यक्ष प्रश्न और उसका हल। *अखण्ड ज्योति, 60*(3)। मथुरा : अखण्ड ज्योति संस्थान, पृ. 30, 31

i.M;k] ç.ko ¼2004] vDVcj½ जीवन शैली आध्यात्मिक हो । *अखण्ड ज्योति, 64*(10)। मथुरा : अखण्ड ज्योति संस्थान, पृ. 23, 55, 56

cãopl ¼1983½ *प्रज्ञा अभियान का स्वरुप, दर्शन एवं कार्यक्रम।* मथुरा : अखण्ड ज्योति संस्थान, पृ. 4

'kek] Hkxorh noh ¼1984½ *परमपूज्य गुरुदेव की सूक्ष्मीकरण जीवनचर्या* / मथुरा : अखण्ड ज्योति संस्थान।

flag] l[kuUnu ¼2007½ *आजादी के बाद की भारतीय पत्रकारिता–एक समीक्षात्मक अध्ययन (अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध)* / देवसंस्कृति विश्वविद्यालय : हरिद्वार।

Eliade, M. (Ed.) (2005) *Encyclopedia of Religion (Vol.11)*. New York: McMillan, p. 715-720.

Eliade, M. (Ed.) (2005) *Encyclopedia of Religion (Vol. 11).* New York: McMillan, pp.7696-7700.

Hiriyanna, M. (1983) Philosophy of values. In H. Bhattacharya (Ed.) *The cultural heritage of India (Vol. III)*. Calcutta: The Ramakrishna Mission Institute of Culture, p.650.

Nandita, (1989) Journalism, making sense out of criminals. In Osho World (Ed.) *The New Dawn.* New Delhi: Osho World. http://www.messagefrommasters.com/Osho/osho/osho_spiritual_journalism.htm/ Retrieved on 11November 2012

Posner, R. (n.d.) *The power of personal values*. http://www.gurusoftware.com/GuruNet/Personal/Topics/Values.htm / 12 November 2012.

Press Council of India (2001) *Future of print media*. New Delhi: PCI

Singh, S. (2012) Content and quality of sacred space in Indian print media. In A. Saxena (Ed.), *Issue of media policy, regulation and ethics* New Delhi: Kanishka Publishers, p. 179-191.